International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

"सहरिया जनजाति के आर्थिक एवं राजनैतिक विकास का अध्ययन"

शोधार्थी - अश्विन रघुवंशी

शोध निर्देशक - डॉ. संध्या भार्गव

सारांश -

मध्य प्रदेश में जनजाति का विशेष स्थान है मुख्य रूप से सहरिया जनजाति का , जो मध्य भारत के क्षेत्र में बसी हुई है। साथ ही मध्य प्रदेश के उत्तरी क्षेत्र में बसी हुई है । यह जनजाति विशेष रूप से पिछड़ी जनजाति के रूप में मध्य प्रदेश में दर्ज है। इसके आर्थिक विकास में सरकार और स्थानीय लोग विशेष भूमिका निभा रहे हैं । जनजाति आपने प्राचीन परंपराओं को बनाए रखते हुए आधुनिकरण की ओर बढ़ रही है साथ ही विकास की नई धाराएं आर्थिक और राजनीतिक विकास की धाराओं में जुड़ रही है । परंपराएं किसी भी भूभाग की पहचान होती है न केवल इनका संरक्षण करना चाहिए बल्कि संवर्धन भी करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियो को इसका ज्ञान हो सके।

मूलशब्द - जनजाति, परंपराएं, सहरिया, समूह, सामाजिक,

- जनजातीय समूह -
  - **"नाडेल" (1953)** का मत है कि प्रथम प्रत्येक समूह का निर्माण व्यक्तियों के द्वारा ही होता है। प्रत्येक समूह का एक क्रियाशील पक्ष होता है और उस समूह की समस्त कानूनी, राजनैतिक तथा आर्थिक क्रियाओं का क्षेत्र अपनी क्रियाशील सीमाओं के अंतर्गत ही हुआ करता है। इसी को आधार मानकर जनजातीय समूह की व्याख्या भी की जा सकती है, क्योंकि जाति, वर्ग तथा जनजातियाँ आदि सभी सामूहिकता के ही भिन्न-भिन्न स्वरूप है।

जनजातीय समूह एक विशिष्ट प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन के स्वरूप हैं। इस प्रकार से जनजाति के क्रियाशील क्षेत्रों के अंतर्गत भौगोलिक, भाषागत, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक आधार आते हैं। "कुक" (1975), "मजूमदार (1965), "रसल" व "हीरालाल" (1916), "सिन्हा" (1968) प्रभृति विद्वानों ने जनजातीय समूह की विशेषताओं में एक सामान्य क्षेत्र, सामान्य राजनैतिक प्रशासन तथा विशिष्ट संस्कृति आदि को माना है।[1]

- **"डा0 रिवर्स" (1932)** ने जनजाति समूह को एक निम्न स्तरीय सामाजिक समूह के रूप से माना है, जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा बोलते हैं, उसकी एक शासन प्रणाली होती है तथा सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु एवं युद्ध इत्यादि की स्थिति में एकता का प्रदर्शन करते हैं।

➢ **जनजातीय समूह की उत्पत्ति-**

मानव वैज्ञानिकों ने जनजातियों की उत्पत्ति के संदर्भ में विभिन्न मत स्थापित किये हैं । इसका मुख्य कारण है कि प्रत्येक मानव वैज्ञानिक ने किसी एक ही जनजाति का अध्ययन किया और उसी को आधार मानकर उसने उत्पत्ति का वर्णन किया है।[2] अतः सभी विद्वानों के मतों के अध्ययन के पश्चात "डी०एन० मजूमदार" (1965, पृष्ठ-374) ने जनजातियों की उत्पत्ति के निम्न आधार प्रस्तुत किये हैं-

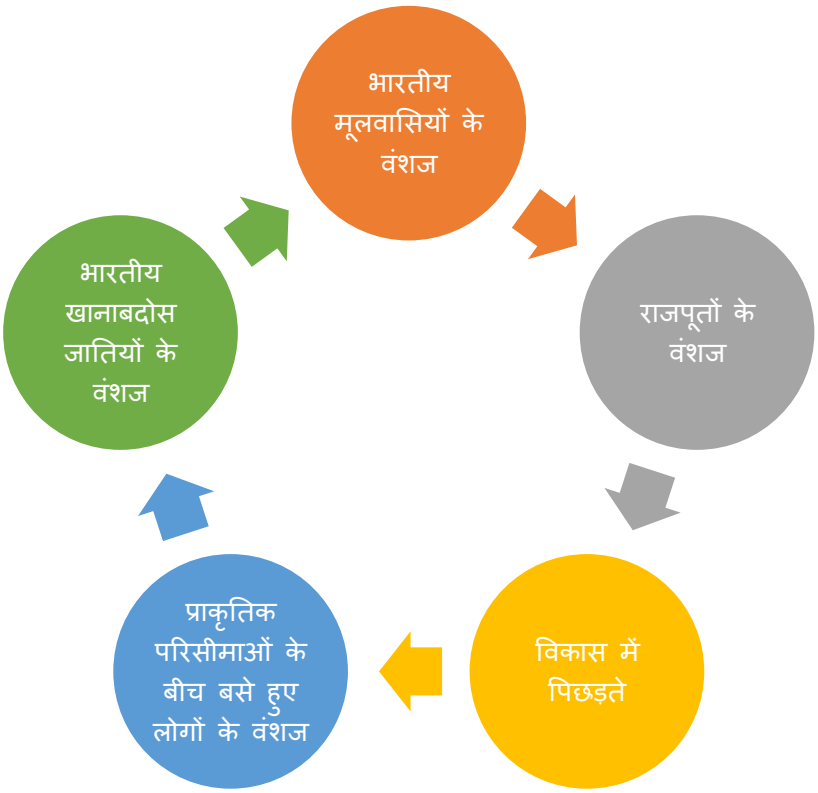

➢ **"सहारिया"** की उत्पत्ति अरेबियन शब्द "साहरा" से हुई है। "साहरा" शब्द का अर्थ होता है "जंगलीपन" यानी जंगलों में रहने वाली उत्तरी अफ्रीकन जनजाति । लेकिन "सहारिया" नाम "सबेराज" से बना है जिसकी उत्पत्ति संस्कृत लेखों में प्राप्त होती है। इनको "कोलेरियन" या द्राविड़ियन" जनजाति का वंशज

माना गया है। ये जातियाँ मध्य भारत में पायी जाती हैं। अतः सहारिया जनजाति की समानता "कोल्, मुण्डा, भील्, भुइया, आदि जातियों के साथ की जाती है। कुछ विशेषताएँ इन लोगों ने "सोइरी" जनजाति से प्राप्त की है। बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र में इनको "रावत" नाम से भी पुकारा जाता है । "रावत" शब्द का उद्गम संस्कृत भाषा के शब्द "राजदूत" से हुआ है। "राजदूत" शब्द का अर्थ होता है" राजा का संदेश वाहक" या " राजा का दूत"।[3]

- **सहरिया जनजाति :-**

सहरिया जनजाति मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों में से एक है। इनका समुचित विकास करना म.प्र. सरकार की प्रमुखता है। सहरिया मूलतः म.प्र., राज्य के गुना, शिवपुरी, दतिया, ग्वालियर, अशोकनगर, मुरैना, भिण्ड, श्योपुर, सागर, दमोह, विदिशा, टीकमगढ़ एवं छतरपुर में निवासरत् है। सहरिया भारत की प्रमुख आदिम जनजातियों (Primitive Tribe) में आते हैं।[4]

सहरिया जनजाति
(जनसंख्या वर्ष 2011 के अनुसार)

विवरण	व्यक्ति	पुरुष	महिला
ग्रामीण	614958 (50.97)	316541	298417
शहरी	591460 (49.07)	304277	287183
योग	1206418	620818	585600

Appendix District Wise Scheduled Tribe Population, pp 3

"सहरिया" का अर्थ "बाघ का साथी" से है। ये वर्षों से जंगलों में रहते हुये जंगली जानवरों के सहचर हो गये हैं। ये आज भी रास्ते के लिये पक्की सड़कों का प्रयोग नहीं करते हैं, तथा झुंड में ही दिखाई देते हैं। सहरिया

जनजाति सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े हुये हैं। जीवन स्तर में प्राचीन परम्पराओं, आदिम प्रवृत्तियों का सहज दृश्यमान है।

शैक्षणिक, स्वास्थ्य, आवास का लगभग पूर्णतः अभाव है। सहरिया मूलतः एक ऐसी जनजाति है जो जंगलों पर निर्भर है। इसी कारण से ये लोग आज भी मूल रूप से अपनी अर्थव्यवस्था का संचालन, शिकार एवं पशुपालन द्वारा करते हैं।

खेती भी प्राचीन कृषि व्यवस्था पर ही आधारित है। विकास के दौर में बढ़ते औद्योगीकरण एवं घटते जंगलों के कारण सहरिया जनजाति को अपने जीवन निर्वाह के लिये सतत् संघर्षशील होना पड़ रहा है।[5]

डी. एन. मजुमदार के अनुसार "मध्यप्रदेश में "सहरियों" को अनुसूचित जनजाति ही माना गया है। साथ ही राजस्थान में भी सहरिया अनुसूचित जनजाति ही है किन्तु उत्तरप्रदेश में इन्हें अनुसूचित जाति माना गया है।"

2011 की जनसंख्या के अनुसार पुरुषों और महिलाओं की संख्या

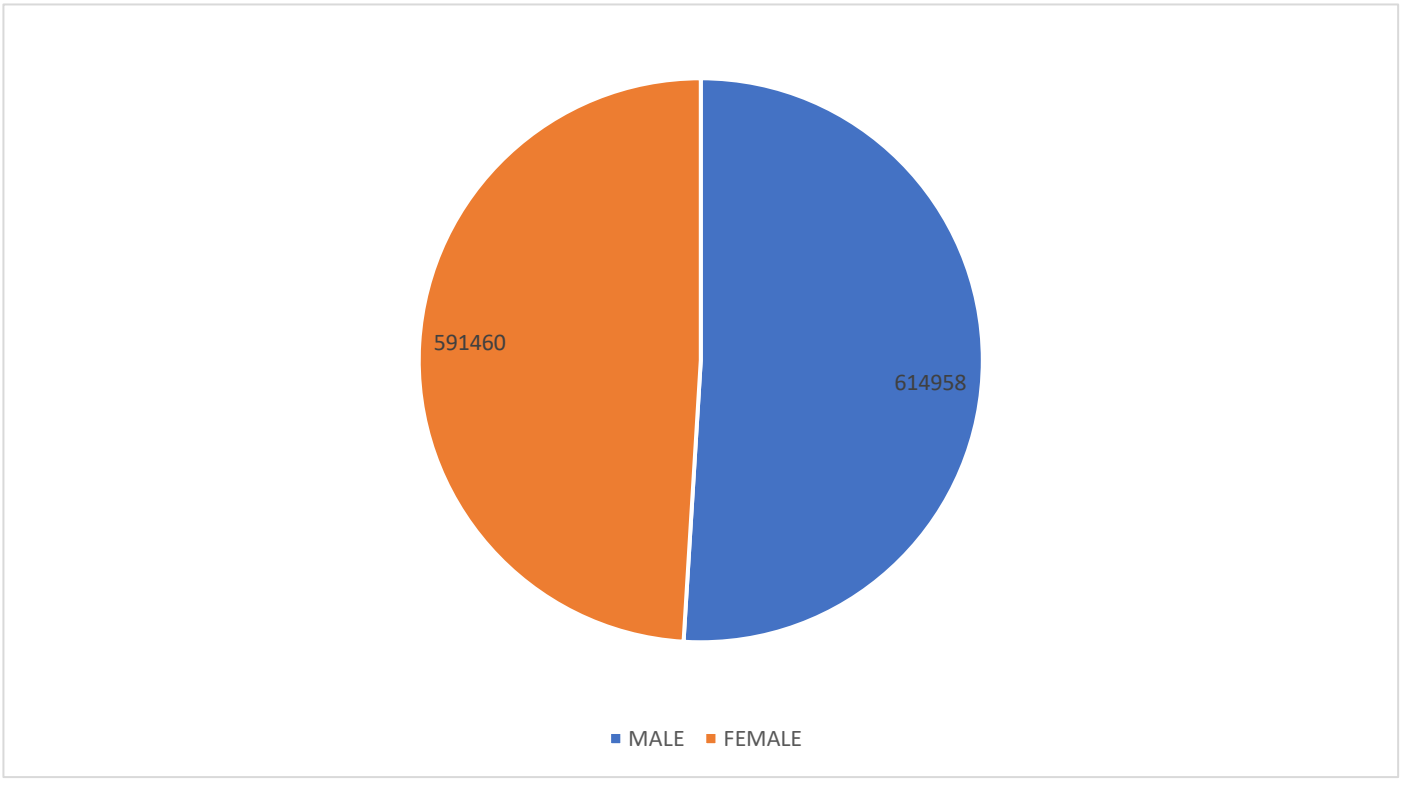

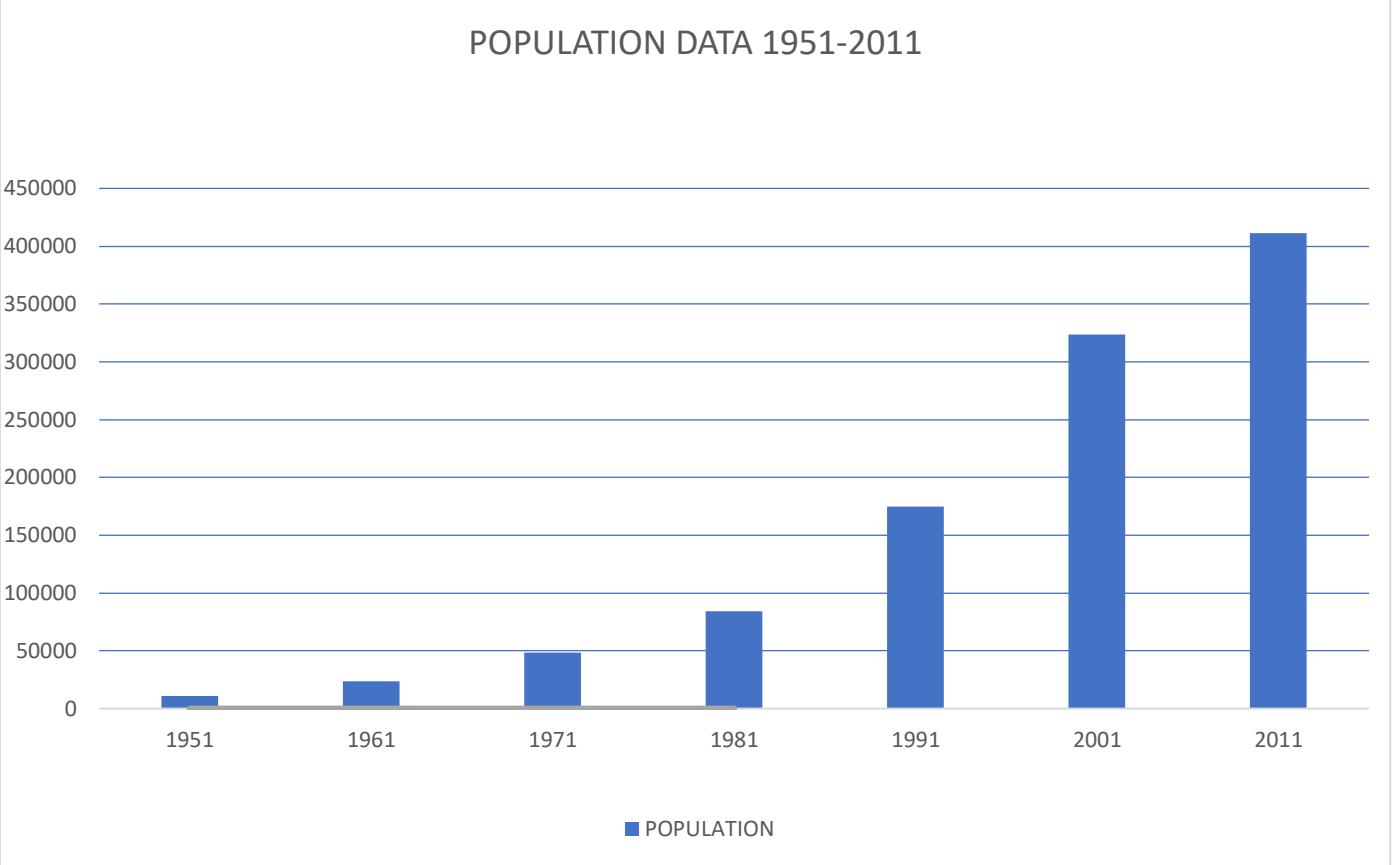

- **"सहरिया जनजाति का आर्थिक विकास**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और विकास का क्रम निरन्तर चलता रहता है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति का सर्वोच्च विकास सरकार व समाज का दायित्व होता है।[6] भारतीय समाज में विभिन्न जनजातियों का संगम हुआ है। भारतीय प्ररिप्रेक्ष्य में जनजातियो की अपनी विशिष्ट पहचान है। ये भौगोलिक रूप से निश्चित भू-भाग (जंगल, पहाड़) आदि में निवास करते है। समाजशास्त्री इन्हे वंचित वर्ग से संबोधित करते है। अधिकांश जनजातिया वन क्षेत्रो में निवास करती है और इनकी आजीविका वन उत्पाद अथवा पशु पालन पर निर्भर करती है। इनमें से कुछ समुदाय आदिम ढंग की विशेषताओं वाले है। इन आदिम समुहों की जनसंख्या, साक्षरता का निम्न स्तर कृषि पूर्व स्तर की तकनीकी क्षमता, आर्थिक रूप से कमजोर आदि विशेषताए विद्यमान है। सहरिया आदिम सुमदाय का एक ऐसा ही विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समुह है।[7]

औपनिवेशिक काल में आदिवासी समुहों के लिए केवल सुरक्षात्मक उपाय प्रदान करने के अलावा उनकी सामाजिक आर्थिक स्थितियों में सुधार के लिए कुछ विशेष प्रयास नहीं किए गये। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात कुछ विशेष प्रयास किये गये यथा विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का संचालन जो व्यक्तिगत व सामुदायिक विकास से संबंधित थी, साथ ही अनुसुचित जनजातियों को रोजगार के समान अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से राज्य प्रायोजित शिक्षण संस्थाओं तथा सरकारी सेवाओं में आरक्षण की व्यवस्था की गई।[8]

सामान्य सहरिया किसी गांव या शहर के आस पास पृथक समूह बनाकर रहना पसन्द करते है। जंगलो में उँची पहाड़ियो की बजाय समतल मैदानी भागों में परम्परागत रूप से समूहों के मकान बनाकर रहते है। कभी कभी ये पहाड़ों पर भी मकान बना लेते है। मकानों के बसावट तीन और से अंग्रेजी के उल्टे यू आकार में होती है। एक और से आने जाने का रास्ता होता है। बीच में चौंक होता है, जिसमें बंगला यानी अतिथि घर होता है। इनके गांव की बसाहट का कोई निश्चित आकार प्रकार नही होता है। बसावट को ही सहराना कहा जाता है। सहराना के बीच एक बड़ा मकान होता है, इसे बंगला कहा जाता है। इसमें जाति पंचायत की बैठक आयोजन की जाती है।सहरिया जनजाति का मुख्य भोजन ज्वार, मक्का, गेहूँ, बाजरा है। जो इसकी मोटी रोटी या चपाती बनाते है।

ये जनजाति महुआ को उबाल कर खाने के शौकीन होते है। डॉ. टी.बी. नायक के अनुसार "प्राकृतिक रूप से उगने वाले कंद, मूल, फल, हरी पत्तिया खाने का सहरियाओं का सबसे प्रिय शौक है। वनस्पतियों का विस्तृत ज्ञान प्रत्येक सहरिया को पुरखों से विरासत में मिला है।"[9]

सहरियाओं का जीवन स्तर अत्यंत साधारण है। भौतिक साधनों का अभाव है अथवा इसके प्रयोग से अनभिज्ञ है। पौष्टिक भोजन की कमी से एवं शरीरिक स्वच्छता के अभाव के कारण विभिन्न बीमारियों व रोगों से ग्रसित रहते है। सहरिया समुदाय में आर्थिक उपार्जन के लिये कोई खास उद्योग या परम्परागत संसाधनों का विकास नही हो पाया है। परम्परागत धन्धे के रूप में कृषि, मजदूरी, शिकार, वनस्पति संग्रहण, महुआ, तेंदूपत्ता, सुखी लकड़ी को एकत्रित करना व बेचना प्रमुख है।

आज का सहरिया आर्थिक संकट से गुजर रहा है। सभी सहरियाओं के पास न तो कृषि भूमि है, और है भी तो आदिम परम्परागत प्रकार से की जाने वाली कृषि उपज कम है। जिससे ये परिवार का ही भरण पोषण करने में भी असमर्थ है। शहरी सहरियाओं ने जरूर कल-कारखानों में काम करना शुरू किया है। सहरियाओं का सबसे महम्वपूर्ण परम्परागत आर्थिक आधार है, जंगल से जड़ी-बूटी इक्टठी करना और बेचना। इन कार्यों में सहरियाओं को युगों से कुशलता प्राप्त है। सहरिया इन जड़ी बूटी से किसी खास प्रकार की दवाई बनाने में असमर्थ है। इसलिए ये इन जड़ी बूटी को सस्ते दामों में ही लोगों को बेच देते है। अपने वनस्पति ज्ञान की उपयोगिता से अनभिज्ञ सहरिया आर्थिक शोषण का शिकार आसानी से हो जाते है। वर्षा के दिनों में अपों की पत्ती, क्लों की पत्ती, बड़ी बिलैया, छोटी बिलैया के फूल और पत्ते बैल, बिलौरा की बेल, टोकरी बनाना आदि सहरिया के परम्परागत धन्धे है|

सहरिया जनजाति क्षेत्र के रेंडम रूप से 100 उत्तर चयन कर्ताओ का चयन किया गया । जिनके आधार पर उनकी आर्थिक स्थिति का आकलन किया गया है।

सहरिया परिवारो में व्यवसायिक अन्तपीढीय गतिशीलता

व्यवसाय	पिता	स्वयं	पुत्र
कृषि	43.00	37.50	18.00
पशुपालन	2.50	0.50	-
कृषि मजदूरी	13.50	40.00	63.00
वनोपज संग्रहण	41.00	20.00	14.00
व्यापार / दुकान	-	1.00	2.50
नौकरी शासकीय	-	0.50	1.00
नौकरी प्राइवेट	-	0.50	1.50
कुल	**100**	**100**	**100**

उपयुक्त तालिकानुसार अध्ययन क्षेत्र के 43.0 प्रतिशत सहरिया उत्तरदाताओ के पिता कृषक या कृषि कार्य करते थे। वर्तमान में 37.5 प्रतिशत सहरिया कृषि कार्य करते है। दोनो पीढी में कृषि कार्य करने वालो की संख्या में कमी आई है तथा तीसरी पीढी में खेती करने वाले सहरिया का प्रतिशत 18.00 प्रतिशत है जो तीसरी पीढी में ओर घाटा है। जो लगभग आधे से भी अधिक घटा है।

- **सहरिया जनजाति का राजनीतिक विकास-**

सहरिया जनजाति का राजनीतिक परिदृश्य किसी भी सामाजिक व्यवस्था में नियमितत्ता व नियंत्रण बनाएं रखने के लिए जो संगठन काम करते है उन्हें राजनैतिक संगठन के रूप में जाना जाता है। चाहे इन राजनैतिक संगठनों अथवा व्यवस्थाओं का स्वरूप परम्परागत रूप से मान्य राज्य व सरकार से अलग ही क्यों ना हो। ये राजनैतिक संगठन समाज के विभिन्न सदस्यों का संगठनों के मध्य संबंधों का संचालन करते है तथा आवश्यकता पड़ने पर नियंत्रण बनाये रखने के लिए दबाव का प्रयोग करते है।[10]

सहरिया जनजाति का कभी भी राजनीति में हस्तखेप नहीं रहा और ना ही ये कभी शासकों के समीप रहे हैं ये हमेशा उपेक्षित ही रहे है। सहरिया जनजाति का प्रथक्करण पहली बार ब्रिटिश काल में टूटा जब सरकार ने इनके सघन वनों की कटाई करवाकर सड़कों का निर्माण किया इस कारण इनके समक्ष रोजी-रोटी का संकट आ खड़ा हुआ। अन्य आदिवासी समुदायों के समान ही सहरिया जनजाति में भी परम्परागत राजनैतिक संगठन पाया जाता है जिसकी समाज में विशिष्ट पहचान होती है।

सहरिया व अन्य आदिवायों के समान ही गांव के बाहर रहना पसन्द करते है सहरिया अपनी बस्ती को सहरना' कहते है। सहरना में एक ही गौत्र के व्यक्ति निवास करते है।हथनरिया, भोपा, बराई, कोटवारा तथा गाँव के वयोवृद्ध सहरिया पंचायत के पाँच पंच के रूप में काम करते है। पंचायत के कोई भी सामाजिक व धार्मिक कार्य बिना पटेल व प्रधान के संभव नहीं है। पटेल समाज की समस्याओं को गांव की पंचायत में ही पूरा प्रयास करते है। पटेल द्वारा किसी भी तरह की अकुशलता या अपराध किया जाना है तो उसे उसके पद से हटा दिया जाता है तथा उसके स्थान पर दूसरा पटेल चुन लिया जाता है।

पंचायत में महिलाओं का कोई हस्तक्षेप नहीं माना जाता और ना ही इन्हें बंगला में जाने की इजाजत होती क्योंकि उनका मानना था कि ये दूसरे गांव से आई है इसलिए इस गांव की सदस्य नहीं मानी जाती थी पंचायत का निर्णय हर स्त्री-पुरुष को मानना जरूरी होता है। परित्यक्ता या बेसहारा लड़की के माँ पिता पंच होते थे तथा वे ही उनकी जिम्मेदारी उठाते थे।

वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य पर नजर डाले तो पता चलता है कि बाह्य समाज के सम्पर्क के परिणामस्वरूप जनजातियों की राजनैतिक चेतना में उत्तरोत्तर प्रगति हुई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जैसे-जैसे न्यायालय व पुलिस का प्रभाव बढ़ा है जनजातीय पंचायतों का प्रभाव कम हुआ है। वर्तमान में सहरिया जनजाति के लोग अपने आपसी विवादों का निपटारा करने के लिए थाने या पुलिस की सहायता लेते है जिसमें उनकी पुरातन पंचायती की शक्तियों का ह्रास हुआ है उनका मानना है कि पंचायतों के द्वारा निर्णय में देरी व हर्जाने की राशि ना दिला पाने की बजाय लोग पुलिस की मदद लेना अधिक पसंद करते है।

मध्य प्रदेश सरकार ने सहरिया जनजाति के उत्थान के लिए कई कदम उठाए हैं, विशेषकर उनके शैक्षिक, आर्थिक और सामाजिक विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए. **आहार अनुदान योजना:** - इस योजना के तहत, सहरिया, बैगा और भारिया जनजाति की महिला मुखियाओं के बैंक खातों में कुपोषण से लड़ने के लिए ₹1500 प्रति माह सीधे हस्तांतरित किए जाते हैं.

उन्हें ₹1 प्रति किलो की दर से रियायती राशन (गेहूं, चावल और नमक) भी मिलता है.

COVID-19 के दौरान खाद्य सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव के मद्देनजर, इस योजना का बजट आवंटन बढ़ाया गया है.

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान: इस योजना के तहत जनजातीय परिवारों के सर्वांगीण विकास के लिए गाँवों का चयन किया गया है, जिसमें सहरिया जनजाति भी शामिल है. इस योजना में भारत सरकार के 18 मंत्रालयों द्वारा अभिसरण के माध्यम से 25 हस्तक्षेप शामिल हैं.**वन धन केंद्र:** सहरिया जनजाति बहुल गांवों में पर्याप्त संख्या में वन धन केंद्र खोले जा रहे हैं.ये केंद्र सहरिया परिवारों के लिए स्वरोजगारमूलक

गतिविधियां संचालित करने में मदद करते हैं.|**शौर्य संकल्प योजना**: इस योजना के अंतर्गत बैगा, भारिया और सहरिया समुदाय के युवाओं के लिए एक अलग बटालियन बनाई जाएगी.| इन जनजातीय समूह के इच्छुक युवाओं को पुलिस, सेना और होमगार्ड में भर्ती कराने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाएगा.

शिक्षा के लिए पहल:सरकार ने सहरिया लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय स्थापित किए हैं| छात्रों के लिए छात्रवृत्ति दरों में वृद्धि की गई है और कॉलेज के छात्रों के लिए आवास भत्ता निर्धारित किया गया है जो छात्रावासों में नहीं रहते हैं| विशेषकर पिछड़ी जनजातीय समूहों के लिए, कौशल विकास, स्मार्ट कक्षाएं, स्कूल भवन और छात्रावास सुविधाओं के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हुए परियोजनाएं लागू की जा रही हैं| **स्वास्थ्य के लिए पहल:** सरकार ने सिकल सेल एनीमिया जैसे रक्त से संबंधित बीमारियों के खतरे को रोकने के लिए हेमोक्लोबिनोपैथी मिशन शुरू किया है, जिससे आदिवासी लाभार्थियों को मुफ्त उपचार प्रदान किया जा सके|[11]

प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम जन-मन) योजना से सहरिया जनजातियों को सबसे बड़ा लाभ मिल रहा है, जिसके तहत उन्हें स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच प्रदान की जा रही है|**दिव्यांगता के लिए सहायता:**- 50 प्रतिशत दिव्यांगता वाले सहरिया लोगों को मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल प्रदान की जाएगी| **अन्य पहलें:**अनुसूचित जनजाति राहत योजना के तहत निराश्रित जनजातीय दुल्हनों और विकलांग, बुजुर्ग, नेत्रहीन और गरीब व्यक्तियों को तत्काल सहायता प्रदान की जाती है| मध्यप्रदेश कौशल विकास परियोजना के तहत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और हायर सेकेंडरी स्कूल ड्रॉप-आउट सहित विभिन्न समूहों के युवाओं को उद्योग-प्रासंगिक प्लेसमेंट-लिंक्ड कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने की योजना है|यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इन योजनाओं और पहलों का उद्देश्य सहरिया जनजाति के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्तर में सुधार करना है, लेकिन चुनौतियों का सामना करने और उनके अधिकारों का पूर्ण रूप से सुनिश्चित करने के लिए अभी और प्रयास किए जाने की आवश्यकता है|

➢ **निष्कर्ष:-**

भारतीय संविधान में कमजोर एवं पिछडे लोगों के लिये विशेष रूप से जनजातियों के विकास एवं उत्थान की समुचित व्यवस्था की गयी है। स्वतन्त्रता के पश्चात इस वर्ग को विकास की मुख्य धारा से जोडने के उद्देश्य से देश में अनेकानेक योजनायें चलाई गयी। मध्यप्रदेश सरकार ने भी इस वर्ग के सर्वांगीण विकास हेतु प्रदेश में शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों को उच्च प्राथमिकता के आधार पर संचालित किया गया है। अतः इस क्षेत्र में सामान्य योजनाओं के साथ-साथ विशिष्ठ योजनायें भी संचालित की गयी है। इस क्षेत्र में केन्द्र तथा राज्य की योजनाओं को आदिम जाति के सर्वांगीण विकास हेतु गठित, सहरिया विकास अभिकरण के माध्यम से चलाया जा रहा है। इस अभिकरण का उद्देश्य इस वर्ग के विकास के लिये इनके अनुरूप योजनायें तैयार करना तथा सहरियाओ को प्रशासनिक अडचनो या जटिल प्रक्रियाओं से मुक्त रखकर लाभ पहुंचाना है।

➢ संदर्भ सूची

1) कंचन. राजेश, सहरिया, शोध प्रबन्ध बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी, 2008, पृ.-04

2) प्रशासकीय प्रतिवेदन. वर्ष 2017-2018. जनजाति कार्य विभाग, पृ. 55

3) T. B. Dr Nain, The Sahariyas, TRATT, Gujrat, 5-6

4) मीणा, शीतल, जनजातियों मानवाधिकार एवं मानव विकास, पोइन्टर पब्लिकेशन, जयपुर, 2012. पृ. 12

5) निरगुणे, बसंत, सहरिया मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला मंडल, भोपाल, 1990. पृ.15

6) डी. एन. मजूमदार रेस एंड कल्चर ऑफ इंडिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस बॉम्बे 1958, पृ.355

7) गुप्ता. डॉ जगदीश. प्रागेतिहासिक भारतीय चित्रकला. पृ.33

8) मेहता, प्रकाशचन्द आदिवासी संस्कृति एवं प्रथाएँ, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2009

9) Dev. Inder (2010), "Development and future or Tribal Cultrue", Janmat Save, Vol. I, And 12-18 march 2010.

10) भानु व्यास उदय, सहरिया विकास अभिकरण एक मूल्यांकन, पृ.31

11) https://www-tribal-mp-gov-in